परम संत पूज्य महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

{जन्म 4 फरवरी 1873-महानिर्वाण 14 अगस्त, 1931}

4 फरवरी, 1873 (बसंत पंचमी) के दिन एक दिव्य आत्मा का अवतरण हुआ जो बाद में परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज के नाम से विख्यात हुए तथा जिन्हें उनके प्रेमी भक्तजन 'लालाजी' के नाम से संबोधित करते थे।

पूज्य लाला जी के पिता चौधरी हरवख्श राय साहब कस्बा भोगाँव (जिला मैनपुरी- उ.प्र.) के निवासी थे। आपके पूर्वजों को मुगल बादशाहों से 'चौधरी' का खिताब प्राप्त था। बचपन में आपका लालन-पालन बड़े लाढ़-चाव से हुआ, किन्तु कुछ समय पश्चात अल्प आयु में ही आपको अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। इसी समय आपका एक मौलवी साहब से मिलना हुआ। मौलवी साहब लाला जी की रहनी-सहनी तथा ईश्वर प्रेम से परिचित थें तथा भीतर ही भीतर लाला जी से बहुत प्रेम करते थे। लाला जी को भी मौलवी साहब की संगति में विशेष आकर्षण मिलता था, किन्तु वह यह नहीं जानते थे कि मौलवी साहब एक उच्च कोटि के संत है। इन मौलाना साहब का शुभ नाम मौलाना फज्ल अहमद खाँ साहब (हुजूर महाराज) था। आप फरूखाबाद के कुतुव (संत शिरोमणि) थे। कालान्तर में आप (मौलवी साहब) पूज्य लालाजी के पूज्य गुरूदेव बने। आपने अपने जीवनकाल में ही अपनी सम्पूर्ण ब्रह्म विद्या लाला जी को दे दी तथा सम्पूर्ण आचार्य की पदवी देकर आदेश दिया कि ''जाओ इस विद्या को हिन्दुओं में ही नहीं, मनुष्य मात्र में बिना किसी भेद-भाव के फैलाओ''। आपने जीवन पर्यन्त अपने गुरूदेव के इस आदेश का पालन किया।

23 जनवरी 1896 को हुजूर महाराज ने आपको उपदेश देकर अपनी सेवा में ले लिया और बराबर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अपनी सौहबत की फैज से फैजयाब करते रहे। 11 अक्टूबर 1896 को आपको कुल्ली इजाजत यानि आचार्य पदवी प्रदान की गई। आचार्य पदवी देते समय हुजूर महाराज ने फरमाया कि ''मुझसे मेरे पीर मुर्शिद खलीफा साहब (गुरूदेव) ने फरमाया था कि मुझसे लोगों को रूहानी फायदा होगा, लेकिन अफसोस ! मैं इस काबिल नहीं हुआ और इस फर्ज को पूरी तरह अदा नहीं कर सका और अब वक्त रूख्सत करीब है। लेकिन मुझको पूरी उम्मीद है कि मेरे बाद तुम इस फर्ज को पूरा करोगे और खलीफा साहब की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) को पूरा करोगे। अगर तुमने मेरा काम पूरा किया, तो दीन और दुनिया दोनों में सुर्खरू (प्रसन्न) होगे और अगर इसमें कौताही की, तो आकबत (परलोक) में दामनगीर हुँगा।''

अक्टूबर 1914 में पूज्य डॉ0 श्रीकृष्ण लाल जी जो उस समय दसवीं कक्षा में पढ़ते थे, आपकी सेवा में उपस्थित हुए। आपने उन्हें मई 1915 में दीक्षा दी तथा अध्यात्मिक शिक्षा का काम सुपुर्द किया। आपने सन् 1915 में ही अपने गृह निवास फतहगढ़ (यू0पी0) में रामाश्रम सत्संग की नींव डाली। आपने डॉ0 श्रीकृष्ण लाल जी को अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी नियुक्त करते हुये सन् 1921 में उन्हें आचार्य पदवी तथा सन् 1931 में लिखित इजाजत ताम्मा प्रदान की। 14 अगस्त 1931 को आपके महानिर्वाण के पश्चात् पूज्य डॉ0 श्री कृष्ण लाल जी ही आपके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बने।

परमसंत, सद्गुरू महात्मा रामचन्द्र जी महाराज अपने समय के महान सन्तों में से एक थे। वह सूफीमत, संतमत तथा वेदान्त के गूढ़ रहस्यों से भली-भाँति परिचित थे। उनके जीवन का उद्देश्य आध्यात्म विद्या को जनसाधारण तक पहुँचाना था। अपने इस मिशन को उन्होंने अपनी अंतिम श्वांस तक जारी रखा। जन साधारण के व्यस्त जीवन को दृष्टिगत रखते हुए उन्होंने संतमत का सरलीकरण किया। प्राचीन रूढ़ियों को निकाल कर वेदान्त तथा सूफीमत का समन्वय करके उन्होने संतमत को अत्यन्त सरल, सुगम तथा सर्वसुलभ बना दिया। इसका लक्ष्य है आत्मा को मन और माया के जाल से निकालकर ईश्वर के चरणों में समर्पित कर देना। धर्म-निरपेक्षता, चरित्र निर्माण सन्तों का सतसंग और आन्तरिक अभ्यास महात्मा जी के मिशन की विशेषताऐं है।

पूज्य महात्मा जी कहा करते थे कि मेरा मत ईश्वर का प्रेम है। मनुष्य की रहनी-सहनी पर विशेष बल देते थे। उनका कथन था कि जो मनुष्य अपनी रहनी-सहनी नहीं बना सकता, वह बृह्मविद्या का अधिकारी नहीं हो सकता। रहनी सहनी का ठीक करना, यानी चरित्र निर्माण, यह है कि मनुष्य की इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदि संतुलन में रहें और धर्म-शास्त्र के अनुसार कार्य करें।

पूज्य महात्मा जी के अनुसार यदि शिष्य गुरू से प्रेम करता है, उनका सतसंग करता है और उनके आदेशों का पालन करता है तो इसी से उसकी आध्यात्मिक पूर्णता हो जाएगी। आमतौर पर जैसा शिष्य होता था उसी के अनुसार वह उसे शिक्षा देते थे। किसी को सुरत शब्द योग की शिक्षा देते थे तो किसी को दिल के जाप (जिक्रे खफी) की और किसी को वजीफा बतला देते थे। परन्तु अधिकतर गुरू से तवज्जह लेने, सतसंग करने और दिल के जाप करने पर जोर देते थे।

पूज्य लाला जी का दार्शनिक ज्ञान केवल हिन्दु फिलॉस्फी तक ही सीमित नहीं था! वह मुस्लिम, बौद्ध और ईसाई धर्म के भी प्रकांड पंडित थे। जिस बृह्म विद्या की शिक्षा और प्रचार पूज्य लाला जी ने किया उसमें सभी दर्शनों के अपूर्व समन्वय की एक अनोखी झलक दिखाई देती है। आपको अनेक सम्प्रदायों की आचार्य पदवी प्राप्त थी, जैसे सूफी वंश की नक्शवंदी, मुजाहिदी मजहरी परम्परा, कबीर पन्थ, बौद्ध मत, राधास्वामी मत! परम संत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज एक पूर्ण योगी, पूर्ण संत और पूर्ण बृह्मवेत्ता थे। आपने योग की, विशेषकर चक्रवन्धन विद्या की, उच्चतम अवस्थाओं को प्राप्त किया था। आप इस मार्ग की प्रत्येक बारीकी से पूर्णतया परिचित थे और सीखने वाले को ऐसे सरलतम मार्ग पर लगा देते थे कि जिससे वह सुगमता एवं तेजी के साथ योग की उच्चतम अवस्थाओं को प्राप्त कर लेता था।